P.G. 1st Semester
C.C.7. – Concept of Management
Unit 1 – Management as a system
Topic – Importance of Planning,
Characteristics of Planning

Dr. Deepika Taterway
Assistant Professor
Guest Faculty
Dept. Of Hole Science
M.M.C. ,Patna University, Patna

Importance of Planning

नियोजन के महत्व

नियोजन के बिना व्यवसाय अटकल बा जी के समान हो जाता है तथा इसके निर्णय अर्थहीन तथा इच्छाएं तात्कालिक इच्छाएं मात्र बनकर रह जाती हैं।

नियोजन के निम्नलिखित महत्व है –

1. **नियोजन उद्देश्य और लक्ष्य पर ध्यान करने के लिए आवश्यक है। नियोजन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु ही बनाया जाता है। नियोजन से उद्देश्यों की पूर्ति में बाधा को कल्पना शक्ति द्वारा देखकर इस में वांछित परिवर्तन किया जा सकता है।**

2. **मनोबल एवं अभिप्रेरणा में वृद्धि हेतु – एक सुनिश्चित योजना संगठन के प्रत्येक स्तर पर**

परिवार के सदस्यों की सहभागिता को प्रोत्साहन देती है मान्यता देती है कार्यों की जानकारी देती है तथा कार्य करने के तरीके के संबंध में बताती है। परिणाम स्वरूप सदस्यों का मनोबल ऊंचा होता है आत्मविश्वास बढ़ता है।

3. क्रिया में मितव्ययिता लाने हेतु – कार्य करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका प्रणाली विकल्पों के चयन से कार्य को सुगमता पूर्वक कम समय शक्ति वर्धन वह करके निपटाया जा सकता है विभिन्न कार्यक्रमों में कार्यक्रम में एवं समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया जाता है कार्य करने के विभिन्न तरीकों पर गहनता से विचार किया जाता है। एवं स्थिरता ओं की स्थिति से निपटने हेतु नियोजन में पर्याप्त प्रावधान रखा जाता है जिसके फलस्वरूप कार्य कम शक्ति, समय व एवं धन में धन व्यय किए ही संपन्न हो जाता है।

4. प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति में सुधार करने हेतु – नियोजन संस्था या गिरी के प्रतिस्पर्धात्मक सकती में सुधार तो करती ही है साथ ही उसमें वृद्धि भी कर देती है मैक्फलैंड ने इसी बात की पुष्टि की है कि नियोजन के द्वारा नवीन वस्तुओं के उत्पादन का प्रारंभ संयंत्र में वृद्धि वस्तुओं के गुण एवं आकृति में परिवर्तन तथा संख्या के प्रतिस्पर्धात्मक सकती में वृद्धि की जा सकती है।

5. उपलब्ध साधनों के अधिकतम उपयोग हेतु – नियोजन विभिन्न क्रियाओं में एकता एवं समन्वय स्थापित करने में सहायक होता है जिसके परिणाम स्वरूप उपलब्ध पारिवारिक साधनों का अधिकतम उपयोग किया जाना संभव हो जाता है।

6. राष्ट्र को समृद्ध बनाने के लिए – व्यक्ति परिवार समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति सुखी संपन्न एवं संतोष रहेगा तो राष्ट्र स्वतः ही उन्नति के शिखर को प्राप्त कर लेगा

परंतु यह सब तभी संभव है जब कि प्रत्येक व्यक्ति अपने धन, समय एवं शक्ति का अधिकतम उपयोग सही दिशा में करें । नियोजित तरीके से कार्य करें।

7. उतावले निर्णय पर रोक लगाने के लिए - नियोजन के माध्यम से उतावले निर्णयों पर रोक लगती है। "लुईस एलन" ने इसी बात की पुष्टि की है- नियोजन के माध्यम से उतावले निर्णय एवं अटकल बा जियों को समाप्त किया जाता है।

8. विभिन्न कार्यों में एकता एवं समन्वय स्थापित करने हेतु – विभिन्न क्रियाओं के मध्य प्रभावी एकता एवं संत समन्वय स्थापित करने का कार्य नियोजन द्वारा संपन्न किया जाता है इसके साथ ही इस बात पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है कि कहीं एक ही काम को पुनः पुनः ना दोहराया जाए तथा विभिन्न क्रियाओं के मध्य कहीं टकराव न उत्पन्न हो जाए। यदि दुर्भाग्यवश ऐसा होता है तो निर्धारित लक्ष्य को व्यक्ति परिवार नहीं प्राप्त

कर सकेगा कार्यों में एकता एवं समन्वय स्थापित करने में नियोजन का महत्वपूर्ण स्थान है।

9. भावी अनिश्चितता एवं परिवर्तनों का सामना करने के लिए – भविष्य अनिश्चित है। कल क्या होगा किसी को कुछ नहीं मालूम यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो नियोजन का महत्व ही सुनने हो जाता है। परंतु भविष्य में कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए नियोजन की जरूरत पड़ती है। प्रसिद्ध विद्वान 'एलेन' ने कहा है - नियोजन भविष्य को पकड़ने के लिए बनाया गया पिंजरा है।

Characteristics of Planning

नियोजन की विशेषताएं

नियोजन की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित रुप से हैं:-

1. नियोजन सतत चलने वाली एक प्रक्रिया है – नियोजन पूर्व निर्धारित लक्ष्य एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। को भी देखती लक्ष्यों को बिना योजना के प्राप्त नहीं कर सकता है। इसी

कारण इसे उद्देश्य एवं लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक साधन माना जाता है।

2. नियोजन सतत चलने वाली प्रक्रिया है - नियोजन लगातार चलने वाली और छोटा होने वाली प्रक्रिया है। पारिवारिक जीवन की सुख शांति समृद्धि एवं सफलता के लिए प्रबंधक को जीवन पर्यंत योजनाएं बनानी पड़ती है।

3. नियोजन एक लचीली में एवं परिवर्तनशील प्रक्रिया है योजना की प्रकृति लचीली है तथा इसमें समयानुसार परिवर्तन होते रहते हैं। भविष्य अज्ञात है और इसमें अनिश्चितता एवं परिवर्तन शीलता का रहना स्वाभाविक है।

4. नियोजन एक बौद्धिक एवं मानसिक प्रक्रिया है - नियोजन एक बौद्धिक एवं मानसिक प्रक्रिया है। नियोजन करता कोई मशीन या उपकरण नहीं होता बल्कि जीता जाता इंसान है। इसके लिए व्यक्ति में

दूरदर्शिता, कुशाग्र बुद्धि, विवेक, ज्ञान, कौशल प्रबंध, चातुर्य वाक्, चातुर्य आदि की जरूरत होती है।

5. विभिन्न वैकल्पिक साधनों में सर्वोत्तम का चयन नियोजन के एक प्रमुख विशेषता है विभिन्न वैकल्पिक विकल्पों में से सर्वोत्तम का चयन करना प्रबंधक के समक्ष अनेक विकल्प कार्य विधियां नीतियां आदि होते हैं उनमें से उसे सर्वश्रेष्ठ का चयन करना होता है। व्यवसाय या पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति बहुत हद तक इन्हीं बातों पर निर्भर करती है।

6. नियोजन की सर व्यापकता नियोजन की एक अति महत्वपूर्ण विशेषता है इसके सर्व व्यापक था पूर्णविराम प्रत्येक व्यक्ति का जीवन पर्यंत योजना बनाना चाहे वह बालक हो या वृद्ध किशोर हो या युवा उद्योगपति हो या मजदूर शिक्षक हो या चिकित्सक प्रबंध व्यवसाय को अच्छे तरीके से

चलाने के लिए भविष्य में कमाने के लिए नियोजन करता है।

7. एकता - एकता भी नियोजन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। कार्यों को सफलतापूर्वक निष्पादन करने के लिए एक समय में केवल एक ही योजना क्रियान्वित की जा सकती है। यदि विभिन्न योजना एक साथ एक ही समय में प्रारंभ कर दी जाए तो निश्चित ही परेशानी भ्रांति एवं अव्यवस्था होगी।

8. पूर्वानुमान ऊपर आधारित प्रक्रिया - नियोजन पूर्वानुमान पर आधारित प्रक्रिया है। इसके अंतर्गत भविष्य में किए जाने वाले कार्यों परिणामों का पहले से ही अनुमान लगा लिया जाता है तथा उस अनुमान के आधार पर उनकी समस्याओं पर समाधान किया जाता है।

9. नियोजन की पारस्परिक निर्भरता - नियोजन एक दूसरे पर आधारित एवं अंतर संबंधित प्रक्रिया तो है ही साथ ही इनमें पारस्परिक निर्भरता भी होती है

क्योंकि इसमें सभी सदस्यों को शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक स्तर पर सहयोग करना होता है।

10. नियोजन की सर्वोपरि ता - नियोजन प्रबंध का महत्व प्रथम एवं महत्वपूर्ण कार्य है। पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए सभी प्रबंध किए क्रिया की जाती हैं परंतु सबसे पहला काम समय पर व्यवस्थित नियोजन करना होता है बिना योजना के कार्य करने से सफलता नहीं मिलती है साथ ही कभी-कभी कई परेशानियां उठानी पड़ती है।